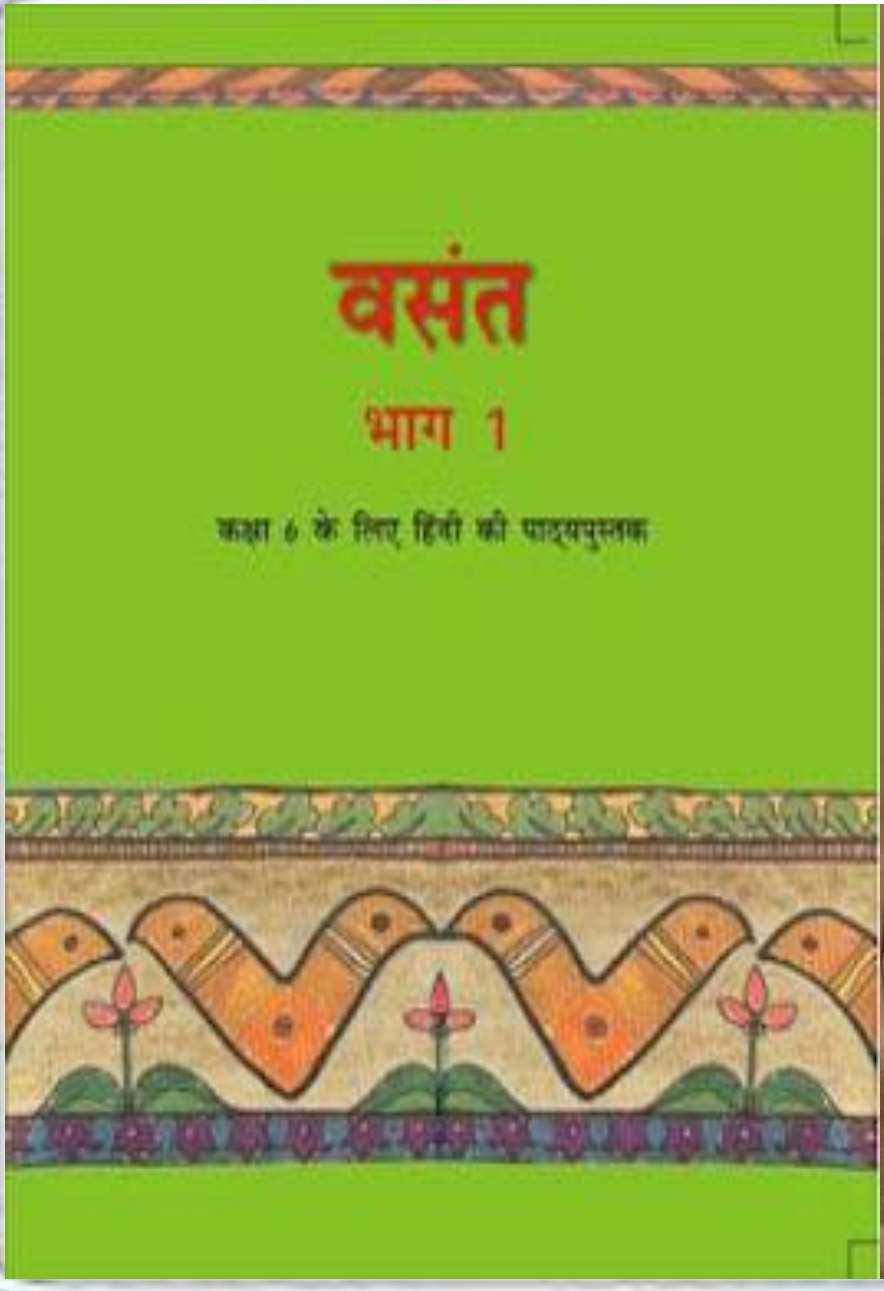

Class 6 Hindi Chapter 2:
Vasant Part – 1 (वसंत भाग 1)

बचपन

कृष्णा सोबती

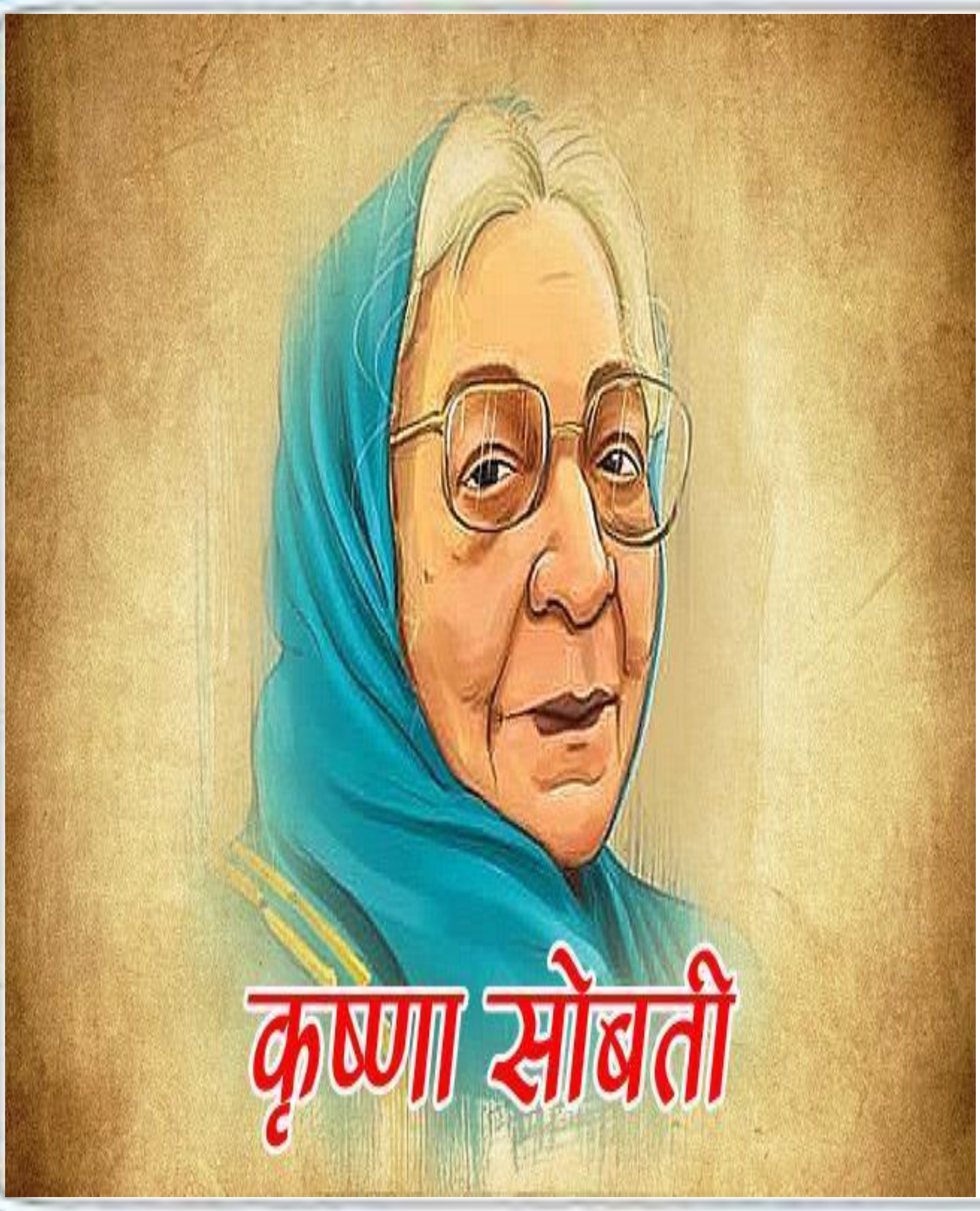

कृष्णा सोबती का जन्म गुजरात में 18 फरवरी 1925 को हुआ था। भारत के विभाजन के बाद गुजरात का वह हिस्सा पाकिस्तान में चला गया है। विभाजन के बाद वे दिल्ली में आकर बस गयीं और तब से यहीं रहकर साहित्य-सेवा कर रही हैं। उन्हें 1980 में 'ज़िन्दगीनामा' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था। 1996 में उन्हें साहित्य अकादमी का फेलो बनाया गया जो अकादमी का सर्वोच्च सम्मान है। 2017 में इन्हें भारतीय साहित्य के सर्वोच्च सम्मान "ज्ञानपीठ पुरस्कार" से सम्मानित किया गया है।

पाठ-सार

पाठ का सारांश

लेखिका कृष्णा सोबती दादी या नानी के उम्र की है। परिवार के लोग उन्हें जीजी कहते हैं। इस उम्र में वह अपने आपको बुजुर्ग महसूस करती है क्योंकि उनका जन्म पिछली शताब्दी में हुआ था। अपने बचपन के बारे में बताते हुए वह कहती है कि तब से अब तक उनके पहनावे में काफी बदलाव आया है। पहले वे गहरे रंग के कपड़े पहनती थी, और अब हलके रंग के। उन्होंने अपनी बचपन की कई फ्रॉक के बारे में बताया है, जिनमें फ्रिल लगे होते थे। वह बालों में रिबन बाँधती थी। उन्हें अपनी ट्यूनिक मोजे और स्टॉकिंग भी याद हैं। बचपन में इतवार की सुबह उन्हें अपने मोजे धोने पड़ते थे और जूते पॉलिश करने होते थे। नए जूते पहनने पर पैर के छालों से बचने के लिए जूतों में रूई लगाना होता था। हर शनिवार को बच्चों को ऑलिव ऑयल या कैस्टर ऑयल पिलाया जाता था, जिसकी गंध उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं थी।

लेखिका अपने बचपन की तुलना आज के समय से करते हुए कहती है कि तब रेडियो, टेलीविजन या ग्रामोफोन नहीं हुआ करता था। तब की कुलफी आइसक्रीम, कचौड़ी-समोसा, पैटीज और शरबत् कोल्ड ड्रिंक में बदल गए हैं। बचपन में लेखिका भाई-बहनों के संग शिमला माल से ब्राउन ब्रेड लाया करती थी। हफ्ते में एक बार चॉकलेट खरीदने की छूट थी और सबसे ज्यादा चॉकलेट इन्हीं के पास होते थे। लेखिका हमेशा रात के खाने के बाद बिस्तर में घुस कर चॉकलेट का मजा लेती थी। उन्हें शिमला के खट्टे-मीठे फल और चेस्टनट भी याद आते हैं चनाजोर गरम की पुड़िया तो आज भी दिखती है। छुटपन में शिमला रिज पर घोड़ों की सवारी में उन्हें बहुत मजा आता था। शाम को रंग बिरंगे गुब्बारे, जाखू का पहाड़ और चर्च की घंटियों की गूँज, उन्हें आज भी याद है। शाम को रिज की रौनक और माल के दुकानों की चमक का अलग ही आकर्षण था। स्कैंडल पॉइंट के सामने की एक दुकान के शोरूम में शिमला-कालका ट्रेन का मॉडल था, जो पिछली सदी की सबसे तेज गाड़ी थी।

अभ्यास

- कठिन शब्दो का उच्चारण।
- पाठ का विदयार्थियों द्वारा वाचन।
- बच्चो में बचपन की यादो को ताजा करना ।
- बचपन के पसंदीदा खाने और कपड़ो की चर्चा कक्षा में करना।

शब्दार्थ

1-शताब्दी- सौ वर्ष

2- दशक- दस वर्ष

3-पोशाक- वेशभूषा

4- फिल- झालर

5-निरा- केवल

6- कमतर- ज्यादा छोटा

7-कोलाहल- शोर

8- सहल- आसान

9-सुभीतेवाली-आरामदायक

10-खीजना-क्रोध करना

अतिलघ प्रश्न-उत्तर

1) इस संस्मरण में लेखिका किसकी चर्चा कर रही है?
- इस संस्मरण में लेखिका अपने बचपन की चर्चा कर रही है।

2) लेखिका का जन्म किस सदी में हुआ था?
- 20 वी सदी में।

3) लेखिका को सप्ताह में कितने दिन चॉकलेट खरीदने की छट थो?
- लेखिका को सप्ताह में एक दिन चॉकलेट खरीदने की छट थो।

4) हर शनिवार को लेखिका को क्या पीना पडता था?
- हर शनिवार को लेखिका को ऑलिव ऑयल और कैस्टर ऑयल पीना पडता था।

लघ प्रश्न-उत्तर लिखो।

6)लेखिका बचपन में इतवार की सुबह क्या-क्या काम करती थीं ?
उत्तरः- लेखिका बचपन में इतवार की सुबह अपने मोजे धोती थी। उसके बाद अपने जूते पॉलिश करके चमकाती थी। इतवार की सुबह इसी काम में लगाती थी।

7) लेखिका बचपन में कौन-कौन सी चीज़े मज़ा ले-लेकर खाती थीं ?उनमें से प्रमुख फलों के नाम लिखो।
उत्तरः- लेखिका बचपन में चाकलेट और चने जोर गरम और अनारदाने का चूर्ण मज़ाले-लेकर खातीथीं ।रसभरी, कसमल और काफ़ल उनके प्रिय फल थे।

दीर्घ प्रश्न-उत्तर लिखो।

1)उम्र बढ़ने के साथ-साथ लेखिका में क्या-क्या बदलाव हुए हैं ?पाठ से मालूम करके लिखो।

उत्तरः- उम्र बढ़ने के साथ-साथ लेखिका के पहनावे में भी काफी बदलाव आए।पहले वे रंग-बिरंगे कपडे पहनती रही नीला-जामुनी-ग्रे-काला-चॉकलेटी।अब गहरे नहीं, हलके रंग पहनने लगी। पहले वे फॉक, फिर निकर-वॉकर, स्कर्ट, लहँगे, गरारे परंतु अब चूडीदार और घेरदार कुर्ते पहनने लगी। उम्र बढ़ने के साथ खाने में भी काफ़ी बदलाव आए।

2)'तुम्हे बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारे समय में कितनी दूरी हो चुकी।यह कहकर लेखिका क्या-क्या बताती है?

उत्तर- उन दिनो मनोरंजन के लिए कुछ घरों में गामोफोन थ परंतु उसके स्थान पर आज हर घर में रेडियो और टलीविज़न देखने मिलता है। कुलफ़ी की जगह आइसकोम ने लेली है। कचौड़ी-समोसा पैटोज में बदल गया है।शहतूत, फ़ाल्से और खसखस के शरबत का स्थान कोक-पेप्सी ने ले लिया है।

(व्याकरण)

वर्ण-विचार

वर्ण अक्षर-भाषा की सबसे छोटी इकाई, जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते, वह वर्ण कहलाती है।
जैसे→अ, र, क्, म्, च् आदि

वर्ण/अक्षर-भाषा की सबसे छोटो इकाई, जिसके टकड़े नही किए जा सकते, वह वर्ण कहलाते

वर्णमाला→ वर्णों का व्यवस्थित क्रम वर्णमाला कहलाता है।
→हिंदी वर्णमाला में कुल **ग्यारह** वर्णहै।

स्वर–जिनवर्णोंकेउच्चारणमेंदूसरेवर्णोंकीसहायतानहींलेनीपड़ती, वेस्वरकहलातेहैं।

→ स्वरोंकीसंख्या 11 होतीहै।

→ "अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ"।

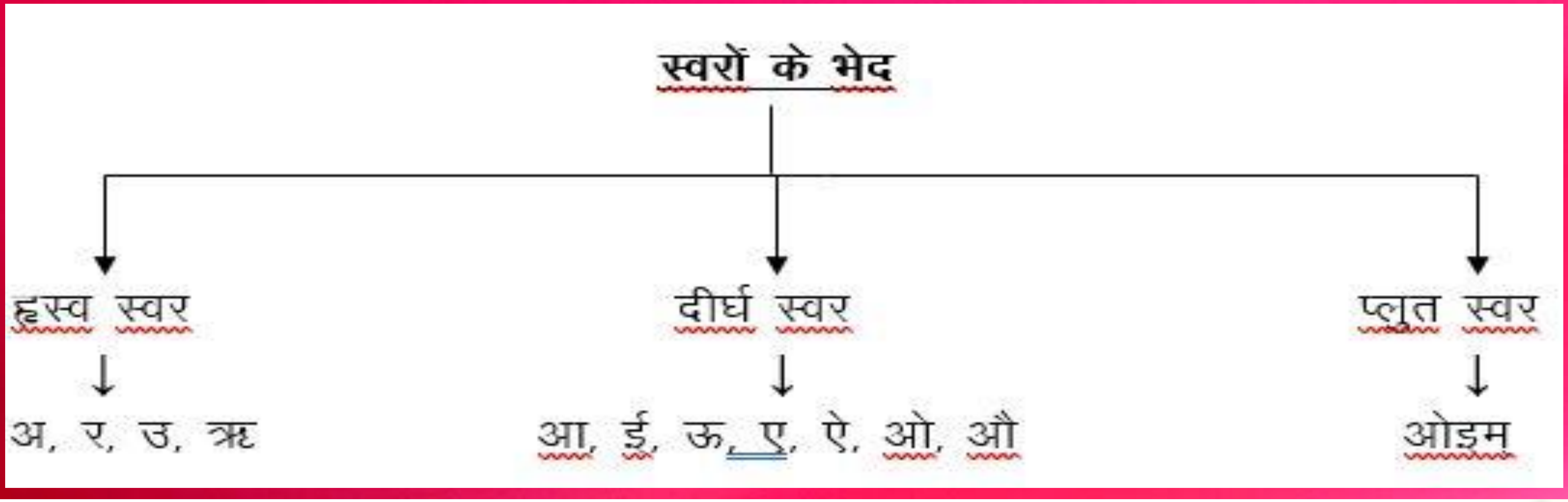

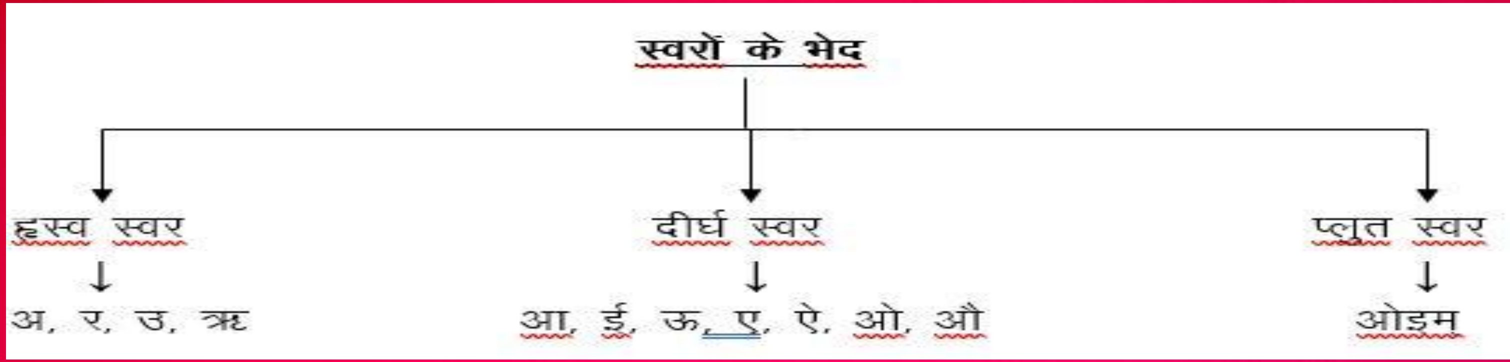

मात्रा→स्वरों के निर्धारित चिह्न होते हैं, जो व्यंजनों के साथ जुड़कर उनका स्वरूप बदल देते हैं, ये चिह्न मात्राएँ कहलाते हैं।

व्यंजन–जो ध्वनियाँ स्वरों की सहायता से बोली जाती है।उन्हें व्यंजन कहते हैं।

जैसे– क रु क् रू अ

लेखन-भाग

दीपावली का निबंध

दिवाली के इस विशेष त्योहार के लिए हिंदू धर्म के लोग बहुत उत्सुकता से इंतजार करते हैं।यह बच्चों से लेकर बड़ों तक के लिए हर किसी का सब से महत्वपूर्ण और पसंदीदा त्यौहार है। दीवाली भारत का सब से महत्वपूर्ण और मशहूर त्यौहार है।जो पूरे देश में साथ-साथ हर साल मनाया जाता है।रावण को पराजित करने के बाद, साल के निर्वासन के लंबे समय के बाद भगवान राम अपने राज्य अयोध्या में लौटे थे।लोग आज भी इस दिन को बहुत उत्साहजनक तरीके से मनाते हैं।भगवान राम के लौटनेवाले दिन, अयोध्याके लोगोंने अपने घरों और मार्गों को बड़े उत्साह के साथ अपने भगवान का स्वागत करने के लिए प्रकाशित किया था। यह एक पवित्र हिंदू त्यौहार है जो बुरेपन पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। यह सिखों द्वारा भी मुगल सम्राट जहांगीर द्वारा ग्वालियर जेल से अपने गुरु, श्रीहरगोबिंदजी की रिहाई मनाने के लिए मनाया जाता है। इस दिन बाजारों को एक दुल्हन की तरह रोशनी से सजाया जाता है ताकि वह इससे एक अद्भुत त्यौहार दिख सके। इसदिन बाजार बड़ी भीड़ से भरा होता है, विशेष रूप से मीठाई की दुकानें। बच्चों को बाजार से नए कपड़े, पटाखे, मिठाई, उपहार, मोमबत्तियां और खिलौने मिलते हैं। लोग अपने घरों को साफ करते हैं और त्योहार के कुछ दिन पहले रोशनी से सजाते हैं। हिन्दू कैलेंडर के अनुसार सूर्यास्त के बाद लोग देवी लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा करते हैं। वे अधिक आशीर्वाद, स्वास्थ्य, धन और उज्जवल भविष्य पाने के लिए भगवान और देवी से प्रार्थना करते हैं।

वे दिवाली त्यौहार के सभी पांच दिनों में खाद्यपदार्थों और मिठाई के स्वादिष्ट व्यंजन बनाते हैं। लोग इस दिन पासा, कार्डगेम और कई अन्य प्रकार के खेल खेलते हैं। वे अच्छी गतिविधियों के करीब आते हैं और बुरी आदतों को दूर करते हैं।

पहले दिन धनतेरस या धन्त्रावदाशी के रूप में जाना जाता है जिसे देवी लक्ष्मी की पूजा करके मनाया जाता है। लोग देवी को खुश करने के लिए आरती, भक्तिगीत और मंत्र गाते हैं। दूसरे दिन नरकाचतुर्दशी या छोटी दिवाली के रूप में जाना जाता है जिसे भगवान कृष्ण की पूजा करके मनाया जाता है क्योंकि उन्होंने राक्षस राजा नारकसुर को मार डाला था। तीसरे दिन मुख्य दिवाली दिवस के रूप में जाना जाता है जिसे शाम को रिश्तेदारों, दोस्तों, पड़ोसियों और जलती हुई फायर क्रैकर्स के बीच मिठाई और उपहार वितरित करते हुए देवी लक्ष्मीकी पूजा करके मनाया जाता है। चौथे दिन भगवान कृष्ण की पूजा करके गोवर्धन पूजा के रूप में जाना जाता है। लोग अपने दरवाजे पर पूजा करके गोबर के गोवर्धन बनाते हैं। पांचवें दिन यमद्वितिया या भाई दौज के रूप में जाना जाता है जिसे भाइयों और बहनों द्वारा मनाया जाता है। बहनोंने अपने भाइयों को भाई दौज के त्यौहार का जश्न मनाने के लिए आमंत्रित करती हैं।

दीवाली के त्यौहार को बुरे पर अच्छाई की जीत का प्रतीक भी माना जाता है। भारत की नहीं बल्कि और भी कई देशों में दीवाली का त्यौहार बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है।

गतिविधि–अपने जमाने की खाने की कुछ चीजे बनाओ और रंग भरो।

धन्यवाद